

प्रवेशिका-3

PRAVESHIKA-3

समय : 3 घंटे]

भाग - I

[पृष्ठांक : 100

(सचना : भाग-I के लिए 50 अंक और भाग-II के लिए 50 अंक निर्धारित हैं।)

1. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :-

15

- | | |
|---------------------------------|----------------------------------|
| 1) अनुशासन | 2) परोपकार |
| 3) भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र | 4) नागरिकों के कर्तव्य और अधिकार |

2. नौकरी की मांग करते हुए प्रधान सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। 10

10

(या)

मुख्य सचिव, शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से शिक्षा संचालक, उत्तर प्रदेश राज्य को एक सामान्य सरकारी पत्र लिखिए कि राज्य की हिंदी समाज सेवी पंजीकृत संस्थाओं की जाँच की जाए और रिपोर्ट मंत्रालय को यथाशीघ्र भेजी जाए।

3. निम्नलिखित गद्यांश को संक्षेप में लिखिए :—

5

कठिनाइयों में चित्त को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। मनुष्य का जीवन-पथ कंटकाकीर्ण है। मनुष्य-जीवन में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं, किन्तु उनका सामना ज्ञानी लोग ज्ञान से करते हैं, मूर्ख लोग रोकर करते हैं। कठिन से कठिन स्थिति में भी प्रसन्न रहना आत्मा की उच्चता का सूचक है। हमें अपनी आध्यात्मिकता का गौरव करना चाहिए। कठिनाइयाँ प्रायः बाह्य होती हैं। यदि उनपर विजय पा लें तो अच्छा ही है और विजय न पा सकें, तो उनसे दबकर दुखी होना कायरता है। कठिनाइयों में दुखी होने से वे बढ़ती रहती हैं, घटती नहीं। हमको अपनी अशक्तियों से निराश न होना चाहिए। कठिनाइयों में दुखित न होना उनपर विजय पाना है। कठिनाइयों में दुखित होना अपने विपक्षियों की जीत स्वीकार करना है। राजा हरिश्चंद्र धैर्य का एक ज्वलंत उदाहरण है।

4. अपनी प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए :-

10

बौद्ध काल में सबसे बड़ा विश्वविद्यालय नालंदा में था। यह स्थान मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह से सात मील दूर उत्तर की ओर, और पटना से चौबीस मील दक्षिण की ओर था। आजकल इस जगह पर ‘बार गाँव’ नामक गाँव बसा हुआ है जो गया जिले में है। नालंदा की प्राचीन इमारतों के खण्डहर यहाँ अभी तक पाये जाते हैं। सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने नालंदा की शान व शौकत का बड़ा ही मनोहर वृत्तान्त लिखा है। चीन ही में उसने नालंदा का हाल सुना था। इधर-उधर घूमते-घूमते जब वह गया पहुँचा, तब विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने उसे नालंदा में आने के लिए निमंत्रण दिया। इससे उसने अपने को धन्य समझा।

5. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

10

इबलारु नांन आरील नांकु केंविकणे मुटित्तेन. अनंतक कालकट्टत्तिल एक्कु मीसे मुणेत्तिरुक्कविल्ले आणाल एक्कु इरुक्क वेण्टुमो अनंत इट्तिल उंना तेंले मुरुक्कियवारु नांन अनंरु वैट्टिरुक वन्तेन. इरण्टु मातंकणील तेर्व मुटिवकं वेणीयायिन. नांन तेर्संकि बेप्रत्तेत उलकमे पार्त्तत्तु. मक्कणे आक्करीयत्तिल मुळ्की एमुन्तनर, मेलुम सन्तेकप्पट्टनर. ओरुवर एन तेर्व मुटिवेप पार्त्तत्तु गुरुटन केयिल वेट्टेटप प्रवेव एन्ऱ कतेतये निणेवुपुत्तिनार. ओरुवर पारेयिल पुल मुणेक्कुम एन्पतेए एरुक केाण्टार. पल नांसंत्तिकर्कणे इरेवन इरुपतेए एरुक केाण्टनर. नांन एन मुतुके तट्टिक केाण्टु 'वेण्टु केाण्टेइ इरु' एन्ट्रेन.

(तमिल)

ఈ विधंगा नेमु आरुलो नालुगु प्रश्नलु चेसित्ति. मीपालु मात्रं अप्पौटीक लेपु, कानि अवि पूंडपलपीनचोट चरू० घेलिवेहु नेमु आरोजा जंटीक वचारु. ठेंदु नेललकु पर्क्का फ्लितमुलु प्रकटीतम्येनु. नेमु क्तिरुद्धवेनावनी लोकाविक तेलिसिंदि. जनं आश्वर्यंलो मुविगारु, तेलारु, क्वित्तिभीभुलेवारु. ग्रुद्धिवाडी चेतिलो पक्की कधमु एवरो गुरुचेसुकनारु. अपाध्यमु काढ पुपाध्यमनि मुकेवरो भाविंचारु. अनेकमुंदि नास्तिकल भगवंतुदिवि विश्वसिंचारु. नन्नु नेमु प्रोत्तुप्रांचकनि, “कलकालं जीविंचु! नाकु अदृष्टं कलिसि वच्चिन्द्दी अंदरिकि कलिसिवच्चाक”, अनि अनुकनारु.

(तेलुगु)

कागं नोंदिदरै नानु आरु प्रश्नीगळल्ली नालु प्रश्नीगळन्नु बगे करिसिदेनु. आ समयदल्ली मीसेगळंतु नन्गे इरलिल्ल. आदरै याव स्थानदल्ली मीसे इरबेक्कित्तु अल्लीय चेमंवन्नु तिरिसुत्त नानु आ दिन मनेगे बंदेनु. एरंदु तिंगळल्ली परिक्षेय फ्लितांशे प्रक्षेपिंदितु. नानु उत्तीर्णनादुदन्नु इक्के प्रपंचवै नोंदितु. जनरु आश्चेयंगोंदरु. केलवरु कुरुक्के श्चेयल्ली कूदासि केंद्रेयन्नु नेसिसि केंद्रेदरु. केलवरु आश्चेयंगोंदरु, केलवरु हंगिदरु, मुत्ते ए केलवरु हंगिदरु. केलवरु नास्तिकरु श्चेष्टरन्नु नंबिदरु. नानु नन्ने चेस्तुन्नु चेप्पेरिसिकेंद्रु ‘सुदीर्घावारी भाज्ज’ एंदु केलेक्कोंदे, केंगे नन्ने राजसिंहासन घुरालीतो खागेये देवर तन्ने इच्छेयंते लल्लरद्दू घुराली एंदु केंद्रे.

(कन्नड)

वेगुतेत तेंगे अनीते नालु चेप्पुजेश एउती. अगं मीशेयाग्नु० उल्लायिरुग्नील्ल, एगांते मीशेयुण्डाकेण॒ भागतेत तेंगीतिरुम्मीकेण॑ तेंगे अगं वीक्किलेयके वग्नु० णेंदु मासततिनक० परीक्षा घलं प्रसिद्धीकरित्तु० तेंगे पास्तायि एगं लेवक० मुषुवग्नु० अनीतेत्तु० अत्तुकरु अनुशुरुत्तिते मुणेत्तियु० वेणेत्तियु० संतंतित्तियु० पेणेत्तियु० चीलरु कुरुक्केन्द्रु कृत्तिलेव वडियुव कम जारिम्मीत्तु०, मर्दु चीलरु कल्लित्ते करुक्कप्पुल्ल॒ उप्पिकेण॑ सम्मतित्तु० पल नास्तिकणारु० उत्तरागेव विशेषित्तु० तेंगे एगं नास्तिकरु क्किप्पुरेत्तु०— उरिलायुस्तायीककेत्तु० एगं सामाज्यु० तितित्तु० वग्नात्तु० पेणेत्ते उत्तरागेत्तु० तितित्तु० तरेके.

(मलयालम)

Thus I solved four questions out of six. Of course, I was not having moustaches at that time, but I, raising my collar (as gesture of victory), returned home. Results of the examination were out after two months. The world saw that I came out successful in it. People were wondering and amazed. Someone started telling, "It is like a treasure in the hands of a blind man", and somebody considered this as "Collecting grass from the rocks". Even Atheists started believing God. I patted myself and said to myself : "Long live!. Let everyone get their due, the way I got my kingdom back."

(अंग्रेजी)